Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-4044

भारत में साक्षरता दर और लिंग अनुपात

Literacy Rate and Sex Ratio in India

Dr. Ajay Krishan Tiwari[1]

Sr. Lecturer, CTE/ BTTC-G.V.M & Former H.O.D,
Department of Education-IASE Deemed to be University, Sardarshahar.
Correspondence E-mail Id: *editor@eurekajournals.com*

जनगणना 2011: भारत में साक्षरता दर और लिंग अनुपात 1901 से 2011 तक सात या उससे अधिक आयु का व्यक्ति, जो किसी भी भाषा में समझ के साथ पढ़ और लिख सकता है, को साक्षर कहा जाता है। लिंग अनुपात को महिलाओं/ 1000 पुरुषों की संख्या के रूप में परिभाषित किया गया है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 74.04 की साक्षरता है और लिंगानुपात 934 Females/ 1000 पुरुषों का है।

1901 से 2011 तक भारत में केवल महिला जनसंख्या की साक्षरता दर: महिला शिक्षा अभी भी बहुत दयनीय स्थिति में है क्योंकि देश की कुल जनसंख्या का लगभग 65% हिस्सा अभी भी साक्षर महिलाओं की आबादी का है। 1951 में देश में साक्षर महिलाओं का प्रतिशत सिर्फ 8.86% था।

भारत में साक्षरता सामाजिक-आर्थिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है, और भारतीय साक्षरता दर 1947 में ब्रिटिश शासन के अंत में 12% से 74.04% (2011 की जनगणना) हो गई है। भारत में अभी भी इस दिशा में जाने के लिए मील की दूरी है। दुनिया के विकसित देशों की तुलना में लिंग अनुपात और बाल लिंग अनुपात अभी भी बहुत कम है। यद्यपि बहुत सारे प्रेरक कार्यक्रमों के कारण भारत का समग्र साक्षरता दर सुधर रहा है। नीचे दिया गया ग्राफ़ 1901 से 2011 तक भारत के साक्षरता दर वार्षिक रिपोर्ट में दिखाता है जिसने मुझे चौंका दिया और इस विश्लेषण को प्रेरित किया।

जनगणना **2011:** भारत में साक्षरता दर **1901** से **2011** तक

S.N.	Census year	% of Female literacy
1.	1901	0.6
2.	1911	1.0
3.	1921	1.8
4.	1931	2.9
5.	1941	7.3

6.	1951	8.86
7.	1961	15.35
8.	1971	21.97
9.	1981	29.76
10.	1991	39.29
11.	2001	53.67
12.		

Source: census 2011, India 2016

1901 से 2011 तक भारत में लिंग अनुपात

लिंग अनुपात परिभाषा: इसे महिलाओं/ 1000 पुरुषों की संख्या के रूप में परिभाषित किया गया है। किसी समय में समाज में पुरुषों और महिलाओं के बीच प्रचलित समानता की सीमा को मापना एक महत्वपूर्ण सामाजिक सूचक है। भारत एक पितृसत्तात्मक समाज है, इसीलिए इस देश में महिलाओं के लिए लिंग अनुपात हमेशा प्रतिकूल है। दी गई तालिका में यह देखा जा सकता है कि 1901 के बाद से महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक नहीं थी।

S.N.	Census Year	Sex Ratio (females/1000 males)
1.	1901	972
2.	1911	964
3.	1921	955
4.	1931	950
5.	1941	945
6.	1951	946
7.	1961	941
8.	1971	930
9.	1981	934
10.	1991	927
11.	2001	933
12.	2011	943

Source: Census 2011 and India 2016

972 के सबसे कम बाल लिंगानुपात ने समग्र लिंगानुपात में वृद्धि को बढ़ावा दिया, जो अब 943 है - जनगणना 1971 के बाद से सर्वोच्च राष्ट्रव्यापी और 1961 से कम छाया-जैसा कि यह एक पुरुष बच्चे के लिए एक निरंतर प्राथमिकता को दर्शाता है। हाल ही में जनगणना 2011 के अनंतिम आंकड़ों के अनुसार, जबकि कुल लिंगानुपात सात अंकों से बढ़कर 940 को छूने के लिए गया था, जनगणना 2001 में 933 के मुकाबले, बाल लिंगानुपात 927 से घटकर 914 हो गया। लिंग अनुपात 1,000 के मुकाबले महिलाओं की संख्या है। पुरुष, जबकि बाल लिंग अनुपात 0-6 आयु वर्ग में 1,000 लड़कों के मुकाबले लड़कियों की संख्या है। समग्र लिंग अनुपात में वृद्धि हुई थी, लेकिन अभी भी बाल लिंग अनुपात में गिरावट पर चिंता है। नवीनतम जनगणना के आंकड़ों में एक झटके के रूप में आया बाल लिंग अनुपात 914 लड़कियों को दर्शाता है, और यह 2001 में 927 से फिसलते हुए स्वतंत्रता के बाद से सबसे कम है।

यह कानूनी प्रावधानों, प्रोत्साहन-आधारित योजनाओं और मीडिया संदेशों के बावजूद है। देश भर में भारतीय, वर्ग और जाति को विभाजित करते हुए, जानबूझकर यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि लड़कियों का जन्म आसानी से न हो। हमारे जनसांख्यिकीय परिदृश्य के इस कृत्रिम परिवर्तन का न केवल लैंगिक न्याय और समानता है, बल्कि सामाजिक हिंसा, मानव विकास और लोकतंत्र भी है।

जनगणना 2011 में नकारात्मक प्रवृत्ति दिखाने वाले राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में जम्मू और कश्मीर (1.01%) दमन और दीव (4.56%) और दादरा और नागर हवेली (12.96%) हैं। 2011 की जनगणना रिपोर्ट यह भी बताती है कि भारत के कुछ प्रमुख हिस्से खतरनाक स्थिति में हैं। इसमें एक राज्य और चार केंद्र शासित प्रदेश शामिल हैं जो हरियाणा (877/1000), दिल्ली के एनसीटी (866/1000), चंडीगढ़ (818/1000), दादरा और नगर हवेली (775/1000), और दमन और दीव में दमन हैं (618/1000)। रिपोर्ट भारत में 31 मार्च, 2011 के 0:00 बजे तक उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर प्रकाशित की गई थी। नीचे दिया गया ग्राफ़ 1961 से 2011 तक भारत के लिंग अनुपात को सीएसआर वार्षिक रिपोर्ट में दिखाता है जिसने मुझे चौंका दिया और इस विश्लेषण को प्रेरित किया।

Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-4044

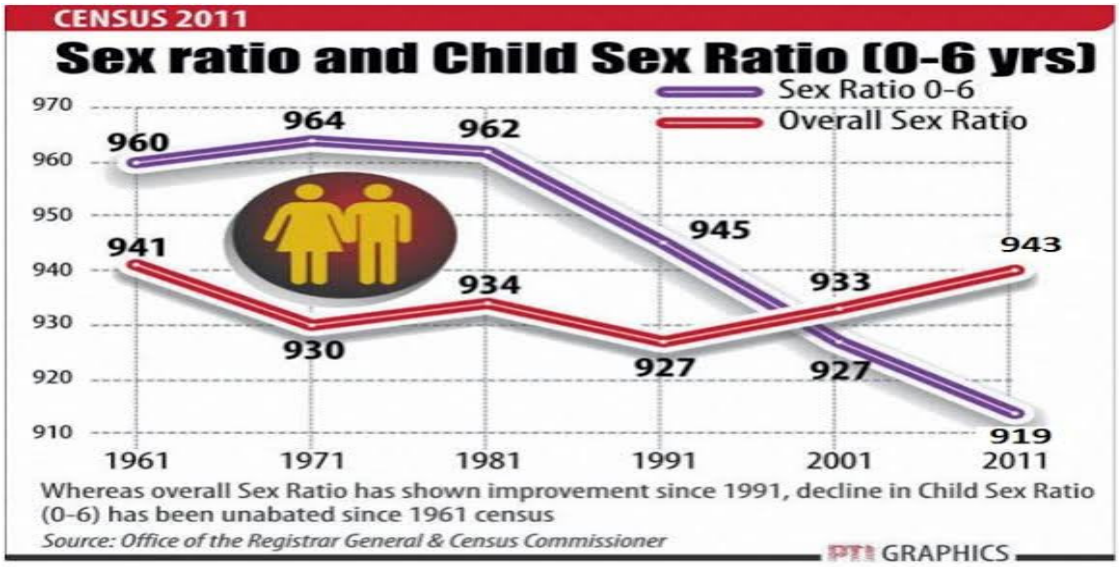

जनगणना 2011: भारत में लिंग अनुपात 1961 से 2011 तक

बढ़ते रुझान को पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, तमिलनाडु, मिजोरम और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में देखा गया है, जबकि शेष 27 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में, अनुपात में गिरावट देखी गई है। यह 971 में मिजोरम में सबसे अधिक था, इसके बाद मेघालय (970), जबकि रॉक नीचे 830 के साथ हरियाणा और पंजाब 846 के साथ था। जिला स्तर पर, हिमाचल प्रदेश में लाहुल और स्पीति का आयु अनुपात सबसे अधिक था। 0-6 का समूह 1,013, जबकि ट्वैंग (अरुणाचल प्रदेश) में, यह 1,005 था। 774 और 778 में झज्जर और महेंद्रगढ़ (हरियाणा) में यह शर्मनाक था। जनगणना के आंकड़ों में 29 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में लिंगानुपात में वृद्धि का संकेत मिलता है, जिसमें केरल में महिलाएं पुरुषों को पछाड़ रही हैं। केरल में 1,000 पुरुषों के मुकाबले 1,084 महिलाएं थीं, उसके बाद पॉन्डिचेरी में जहां यह आंकड़ा 1038 था।

दमन और दीव का लिंगानुपात 618 है, जो कि दादरा और नगर हवेली के बगल में 775 पर है। जिलों में पांडिचेरी का लिंगानुपात सबसे अधिक 1,176 है, इसके बाद उत्तराखंड में अल्मोड़ा है, जहां यह 1,142 है। दमन में, यह 533 पर सबसे कम है, और लद्दाख के लेह में, यह 583 है। जम्मू-कश्मीर, बिहार और गुजरात के तीन प्रमुख राज्यों ने 2001 की जनगणना के आंकड़ों की तुलना में लिंग अनुपात में गिरावट देखी है, जबकि 29 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में वृद्धि देखी गई है।1991 में 945 से 927 तक बाल लिंगानुपात (0-6 वर्ष) में गिरावट और 2001 में 914 महिलाओं की संख्या बढ़कर 2011 में प्रति 1.000 पुरुषों पर स्वतंत्रता के बाद सबसे कम, अलार्म के लिए कारण है, लेकिन गंभीर नीति के लिए

भी फिर से विचार करें । पिछले दो दशकों में, गिरावट की दर धीमी हो गई है लेकिन एक शहरी घटना के रूप में जो शुरू हुआ वह ग्रामीण क्षेत्रों में फैल गया है।

भारतीय समाज में बेटा-बेटी में फर्क करने की मानसिकता में बदलाव लाने और लड़कियों की दशा और दिशा सुधारने के लिए पिछले कुछ वर्षों से सरकारी स्तर पर 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे कई महत्वपूर्ण अभियान चलाए जाने के बावजूद हाल ही में 'नीति आयोग' की जो चौंकाने वाली रिपोर्ट सामने आई है, वह बेहद चिंताजनक है। 'हैल्दी स्टेट्स एंड प्रोग्रेसिव इंडिया' (स्वस्थ राज्य और प्रगतिशील भारत) नामक इस रिपोर्ट के अनुसार देश के 21 बड़े राज्यों में से 17 में लिंगानुपात में गिरावट दर्ज की गई है।

जन्म के समय लिंगानुपात मामले में 10 या उससे अधिक अंकों की गिरावट वाले राज्यों में प्रधानमंत्री के गृह राज्य 'गुजरात' की हालत सबसे खराब है, जहां लिंगानुपात 53 अंकों की गिरावट के साथ 907 से घटकर महज 854 रह गया है। कन्या भ्रूण हत्या के लिए पहले से ही बदनाम हरियाणा लिंगानुपात मामले में 35 अंकों की गिरावट के साथ दूसरे स्थान पर है जबकि राजस्थान में 32, उत्तराखण्ड 27, महाराष्ट्र 18, हिमाचल प्रदेश 14, छत्तीसगढ़ 12 और कर्नाटक में 11 अंकों की गिरावट दर्ज की गई है। लिंग समानता अपने आप में एक मुख्य विकास उद्देश्य है। यह स्मार्ट अर्थशास्त्र भी है। ग्रेटर लिंग समानता उत्पादकता को बढ़ा सकती है, अगली पीढ़ी के लिए विकास के परिणामों में सुधार कर सकती है और संस्थानों को अधिक प्रतिनिधि बना सकती है।

भारत का संविधान महिलाओं को समानता प्रदान करता है और राज्य को सामाजिक-आर्थिक, शिक्षा और राजनीतिक परिदृश्य के मामले में महिलाओं को उनके नुकसान की स्थिति से उन्नत करने के लिए उपायों को अपनाने का अधिकार देता है। किसी भी उम्र की महिलाओं पर अत्याचार हमारे सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन में नियमित विशेषता है। दुर्भाग्यवश महिलाएं पुरुषों के वर्चस्व वाले समाज के शीर्ष पर उपेक्षित एक ऐतिहासिक प्रक्रिया में हैं। यह सुविधा शायद अभी भी हाल की अवधि में बनी हुई है, यद्यपि यह सीमा भिन्न हो सकती है। वर्तमान संदर्भ में यह अध्ययन कुछ महत्वपूर्ण वर्गीकरणों की जांच करने की कोशिश करता है, जो कि एक ट्रेंड की प्रक्रिया में लिंग के मुद्दों की सीमा और भिन्नता के संबंध में है। विभिन्न वर्षों के लिए भारत के सेंसर और सैंपल पंजीकरण प्रणाली के आंकड़ों का विश्लेषण करने वाला अध्ययन इस संबंध में कुछ प्रासंगिक विशेषता को उजागर करता है। समय की काफी हद तक लिंग अंतर प्रक्रिया के संबंध में जनसंख्या के सामाजिक वर्गीकरण के विभिन्न पहलुओं में भिन्नता के संबंध में डेटा का विश्लेषण करने की सुविधा के लिए असमानता (आईडी) का एक नया सूचकांक विकसित किया गया है।

अध्ययन पुरुषों के संबंध में कुछ पक्षपात दिखाता है और एक प्रवृत्ति प्रक्रिया में यह बना रहता है।

असमान लिंग अनुपात

राष्ट्रीय महिला आयोग (अब; दिल्ली; पंजाब और हरियाणा) के एक अध्ययन के अनुसार आर्थिक रूप से प्रगतिशील हो सकता है, लेकिन अन्य राज्यों की तुलना में इसका लिंगानुपात कम है। लिंग भेदभाव के खिलाफ भारी संघर्ष के बाद भी एक बड़ा लिंग अनुपात घाटा लगातार जारी है।

रिपोर्ट में, "भारत में लिंग समानता को समझना 2012-13, NCW और संयुक्त राष्ट्र की संयुक्त पहल ने बहुत सोचा और उत्तेजक तथ्यों को सामने लाया गया। अध्ययन के अनुसार, दिलचस्प रूप से, दिल्ली, चंडीगढ़ और हरियाणा का प्रतिकूल अनुपात है, हालांकि ये राज्य आर्थिक रूप से काफी प्रगतिशील हैं। उन्होंने कहा कि प्रति व्यक्ति नेट स्टेट डोमेस्टिक प्रोडक्ट (एनएसडीपी) के अनुसार हरियाणा में प्रति व्यक्ति एनएसडीपी 78781 रुपये है जबकि दिल्ली और पंजाब में प्रति व्यक्ति एनएसडीपी क्रमशः 116886 रुपये और 62153 रुपये है। उन्होंने कहा कि प्रति व्यक्ति नेट स्टेट डोमेस्टिक प्रोडक्ट (एनएसडीपी) के अनुसार हरियाणा में प्रति व्यक्ति एनएसडीपी 78781 रुपये है जबकि दिल्ली और पंजाब में प्रति व्यक्ति एनएसडीपी क्रमशः 116886 रुपये और 62153 रुपये है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि शहरी भारत की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में पुरुषों और महिलाओं की संख्या के बीच का अंतर कम है, पूर्व में प्रति 1000 पुरुषों के लिए 919 महिलाओं और बाद वाले 902 प्रति 1000 के साथ आंका जा रहा है।

भारत में लड़की पैदा होने के लिए दुनिया में सबसे खतरनाक जगह है। संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक मामलों के विभाग (UN-DESA) द्वारा जारी किए गए सबसे मौजूदा आंकड़ों के अनुसार। 40 वर्षों में 150 देश बताते हैं कि भारत और चीन दुनिया के केवल दो देश हैं जहाँ 2000 के दशक में महिला शिशु मृत्यु दर पुरुष शिशु मृत्यु दर से अधिक है। आंकड़ों से पता चलता है कि 1-5 वर्ष की आयु की एक भारतीय बालिका की मृत्यु भारतीय लड़के की तुलना में 75% अधिक है, जिससे दुनिया के किसी भी देश में बाल मृत्यु दर में यह सबसे खराब लिंग अंतर है। सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों द्वारा एक उच्च बालिका मृत्यु दर को समझाया गया है। बचपन में लड़कियों के लिए इतना मजबूत जैविक लाभ है कि लड़कियों के बीच उच्च मृत्यु दर को "एक शक्तिशाली चेतावनी के रूप में देखा जाना चाहिए जो संसाधनों के लिए अंतर उपचार या पहुंच लड़कियों को नुकसान में डाल रही है।

Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-4044

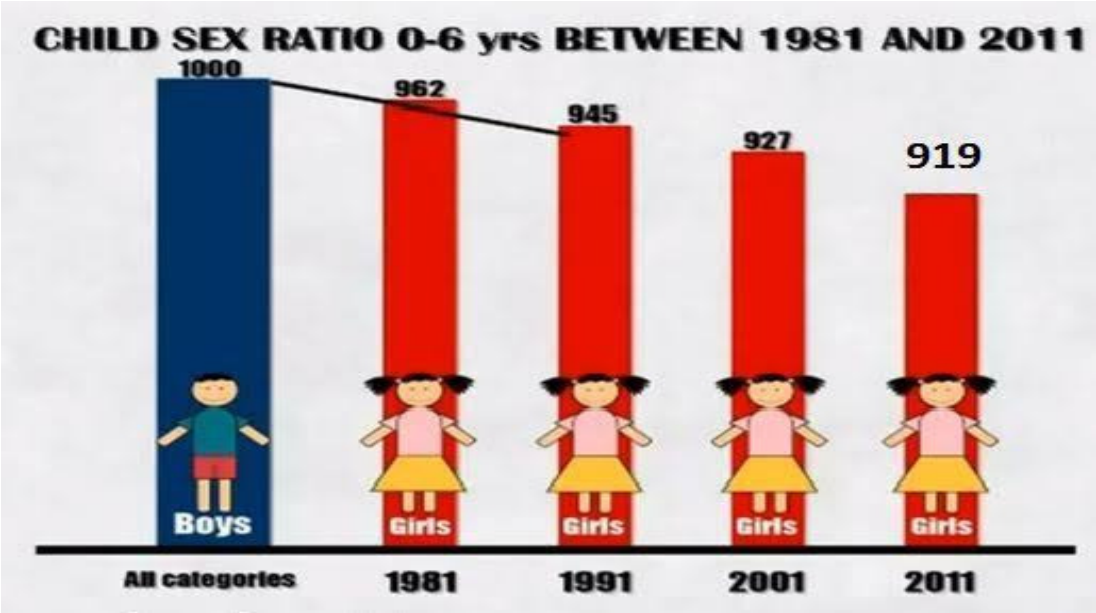

सरकारी सर्वेक्षण के अनुसार, भारत का लिंगानुपात

कोई भी राष्ट्र, समाज या समुदाय अपने सिर को ऊँचा नहीं रख सकता है और यदि यह समुदाय के आधे हिस्से के खिलाफ भेदभाव की प्रथा का समर्थन करता है, तो यह सभ्य दुनिया का हिस्सा होने का दावा नहीं कर सकता है।

लिंग अनुपात में गिरावट के कारण

घटते लिंगानुपात की प्रवृत्ति के पीछे कई कारक हैं। भारत में अजन्मे बच्चे के लिंग का पता लगाने के लिए और अंत में) सेक्स चयन के लिए चिकित्सा तकनीक का दुरुपयोग किया जाता है, इस प्रकार महिला भ्रूण को पहचानती है और गर्भपात कराती है। कई अध्ययनों से पता चला है कि प्री नेटल सेक्स निर्धारण भारत में कम लिंगानुपात का मुख्य कारण है, जिसके बाद महिला भ्रूण का गर्भपात होता है। प्रौद्योगिकी के दुरुपयोग के अलावा, भारत के कई हिस्सों में पितृसत्तात्मक समाजों ने अपने पूर्वाग्रह और कट्टरता का अनुवाद लड़कों के लिए एक अनिवार्य प्राथमिकता के लिए किया है और लड़की के साथ भेदभाव किया है।

महिलाओं के काम को हमेशा निर्णय लेने में सीमित स्वायत्तता के साथ सामाजिक रूप से अवमूल्यन किया जाता है। पितृसत्ता हमेशा लैंगिक असमानता पर मजबूत पकड़ बनाए रखती है। (लिंग निर्धारण परीक्षण को एक 'प्रजनन विकल्प' प्रदान करने के रूप में देखा जाता है - एक लड़का या लड़की का फैसला करने का विकल्प। सेक्स निर्धारण तकनीकों के तुरंत बाद, 1983 में भारतीय संसद ने सभी सार्वजनिक संस्थानों में लिंग निर्धारण की प्रथा

Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-4044

पर प्रतिबंध लगा दिया। नागरिक समाज और महिला संगठन द्वारा लंबे अभियान और कुछ के बाद, प्राइम-नेटल डायग्नोस्टिक तकनीक अधिनियम, 1994 में पारित किया गया।

कानून को राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दोनों स्तरों पर लागू किया गया है। इसी समय, अधिनियम के प्रावधानों में कई कठिनाइयों और खामियों के कारण असंतोषजनक परिणाम सामने आते हैं जैसे निरीक्षण और निगरानी करने के लिए संसाधनों की कमी, संबंधित योग्य कर्मचारियों की कमी, विभिन्न स्तरों पर सलाहकार समितियों का खराब प्रदर्शन, कानून की अपर्याप्त समझ। और प्रक्रियात्मक त्रुटियाँ।(समाज में पुरुषों के अधिशेष से विवाह-क्षमता की कमी होती है, और परिणामस्वरूप समाज में हाशिए पर जाने से सामाजिक व्यवहार और हिंसा हो सकती है, जिससे सामाजिक स्थिरता और सुरक्षा को खतरा हो सकता है।

Figure 1: Sex Ratios in India (1901-2001)

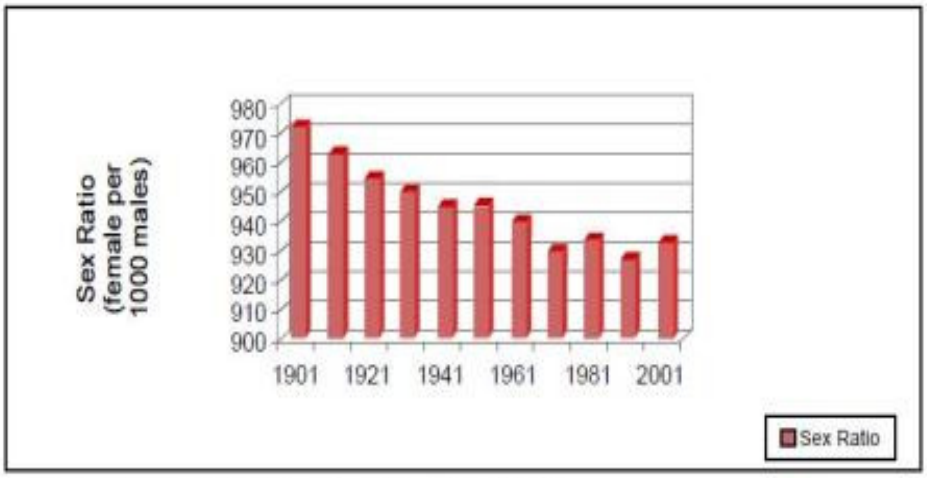

Source: Census of India, 2001. "Provisional Population Totals"

"आदर्श लिंग अनुपात क्या है ?"

आमतौर पर लिंगानुपात या तो वास्तविक जनसंख्या के आधार पर निर्धारित किया जाता है। मेरे लिए इन विधियों में से एक भी निष्कर्ष पर नहीं आती है क्योंकि तथाकथित लापता महिलाएं जनगणना के अगले दिन जन्म लेने के कारण हो सकती हैं। फिर भी मैंने यह समझने की कोशिश की कि ऊपर का ग्राफ इतना दयनीय क्यों है। गहरी समझ पाने के लिए पूरे परिदृश्य पर एक व्यापक नज़र डालते हैं।

भारतीय दैनिक समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में कन्या भ्रूण हत्या के बारे में लेख लिखे बिना एक भी दिन नहीं देखा जाएगा। सेंटर फॉर सोशल रिसर्च (CSR) ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में कहा है कि परिवार की परंपरा और दहेज प्रथा कन्या भ्रूण हत्या के दो प्रमुख कारणों के रूप

में सामने आई है '। यह उद्धरण भारतीय फेमिनाज़िस के पसंदीदा में से एक है। दो अन्य देशों चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में भारत के उपलब्ध ऐतिहासिक जनगणना आंकड़ों के आधार पर इस मुद्दे के बारे में एक आम आदमी का विश्लेषण है।

यह समान अवधि के लिए डेटा है जो प्रत्येक जनगणना के अनुसार कुल पुरुषों और महिलाओं की कुल संख्या के साथ आबादी दिखा रहा है। मुझे लगता है कि आपने 60 या मध्य 60 के दशक में शुरू किए गए पुरुषों और महिलाओं की संख्या में उल्लेखनीय अंतर देखा होगा। तब तक ग्राफ गर्दन से गर्दन तक जाता है, हालांकि महिलाएं संख्या में थोड़ी कम थीं। मेरा कहना है, अगर हम सीएसआर के निष्कर्ष को उसके अंकित मूल्य में लेते हैं, अर्थात, पारिवारिक परंपरा और दहेज प्रथा ही कन्या भ्रूण हत्या का प्रमुख कारण है, तो जब हमने सदी की पहली छमाही के दौरान महिलाओं की संख्या कम है तो 'क्यों किसी भी उपलब्ध लिंग निर्धारण तकनीक नहीं है? मुझे पता है कि CSR और फेमिनाज़िस अलग-अलग कार्ड, antic कन्या भ्रूण हत्या 'और death दहेज मृत्यु' खेलने जा रहे हैं।

इससे पहले कि हम उस सिद्धांत को पचाने की कोशिश करें, हमारी जनसंख्या प्रवृत्ति की तुलना संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ की जाए। इस कारण से कि मैंने यूएसए को चुना है क्योंकि यह बहु-जातीय और बहु-नस्लीय समुदायों के साथ बहुत विविध है; इसलिए ऐसी कोई सामाजिक संरचना नहीं है जो सभी को प्रभावित कर सके। जो यह मानता है कि भारत में मादा भ्रूण की चयनात्मक हत्या के कारण यह भी मानना चाहिए कि संयुक्त राज्य अमेरिका में नर भ्रूण की चयनात्मक हत्या हुई थी।

भारत में महिला जनसंख्या में गिरावट के बारे में चिंता एक राजनीतिक, आर्थिक और सुधारवादी मुद्दा बनने के लिए सोशल डोमेन मुद्दे से ऊपर उठना है और पूरे समाज को संवेदनशील होना चाहिए। इस चुनौती को केवल गोल अहसास से ही पूरा किया जा सकता है, यहां तक कि स्थापित किए गए पितृसत्तात्मक में भी, लिंगों के बीच एक प्राकृतिक संतुलन बनाए रखना आवश्यक है, जो न केवल सामाजिक प्रणाली, बल्कि संपूर्ण आर्थिक प्रणाली को मरम्मत से परे क्षतिग्रस्त हो जाएगा। विभिन्न समूहों के समर्थन का समर्थन करने और एक केंद्रित तरीके से प्रयासों को संचालित करने के लिए, सरकार को सुदृढीकरण कार्यक्रमों और समर्थन तंत्र के समन्वित मिश्रण के माध्यम से अगली जनगणना ऑपरेशन द्वारा लिंग अनुपात को संतुलित करने के लिए एक मिशन स्थापित करने में एक लीड लेना चाहिए।

महिलाएं अब वैश्विक श्रम बल का 40 प्रतिशत, विश्व की कृषि श्रम शक्ति का 43 प्रतिशत और दुनिया के आधे से अधिक विश्वविद्यालय के छात्रों का प्रतिनिधित्व करती हैं। यदि उनके कौशल और प्रतिभा का पूरी तरह से उपयोग किया जाता है तो उत्पादकता बढ़ाई

Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-4044

जाएगी। समाज के लिए लैंगिक समानता अधिक व्यापक रूप से मायने रखती है। महिलाओं को आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक अभिनेताओं के रूप में सशक्त करना नीतिगत विकल्पों को बदल सकता है और संस्थानों को कई प्रकार की आवाज़ों का प्रतिनिधि बना सकता है। भारत में बाल लिंगानुपात 1,000 पुरुषों के मुकाबले 914 महिलाओं तक गिर गया है, जो कि जनगणना 2011 के अनुसार स्वतंत्रता के बाद सबसे कम है। लिंगानुपात में गिरावट एक मूक आपातकाल है।

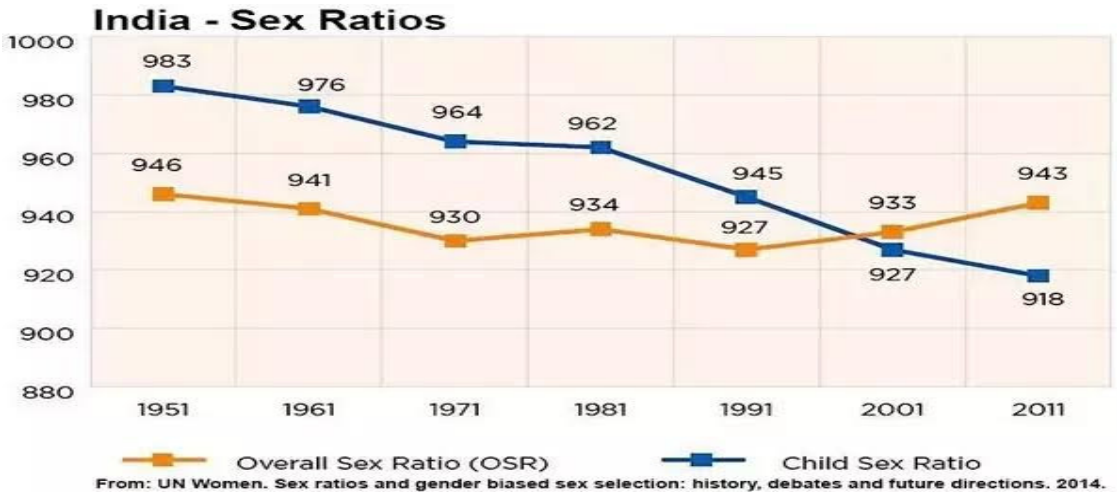

From: UN Women. Sex ratios and gender biased sex selection: history, debates and future directions. 2014.

भारत का जेंडर गैप

वैश्विक लैंगिक अंतर समीक्षा में भारत की कहानी थोड़ी अच्छी खबर है और इसके बाद बहुत बुरी खबरें हैं। पहली खुशखबरी: 1993 में पारित 73 वें (पंचायत) संविधान में संशोधन ने जमीनी स्तर पर दस लाख महिलाओं को राजनीतिक व्यवस्था में ला दिया। एक और चमकदार संकेतक सरकार की महिला प्रमुख से संबंधित है। पिछले 50 वर्षों में से सोलह पर कार्यकारी कार्यालय में एक महिला का कब्जा था और भारत दुनिया में चौथे स्थान पर है। (और यह सोनिया गांधी, मायावती और जयललिता जैसे बड़े लोगों की गिनती के बिना है!) राजनीतिक सशक्तीकरण उप-सूचकांक में भारत का प्रदर्शन दुनिया के बाकी हिस्सों के मुकाबले मजबूत है, 24 वें स्थान पर रैंकिंग है, हालांकि लिंग अंतर का केवल 27% हिस्सा रहा है

महिलाएं संसद में 11% और मंत्री स्तर के 10% पदों पर, भारत को क्रमशः 100 वें और 93 वें स्थान पर रखती हैं और अब बुरी खबर: भारत स्वास्थ्य और उत्तरजीविता उप-सूचकांक में अंतिम स्थान (134 वां) रखता है। महिलाएं पुरुषों की तुलना में केवल एक वर्ष अधिक जीवित रहती हैं (महिलाओं के लिए 54 वर्ष बनाम पुरुषों के लिए 53 वर्ष)।

तुलनात्मक रूप से, संयुक्त राष्ट्र के लिंग-संबंधित विकास सूचकांक द्वारा उपयोग किए जाने वाले मानक पांच साल के "इष्टतम" अंतराल को दर्शाते हैं। यह इस चर पर 134 देशों के बीच भारत को 119 वें स्थान पर रखता है। द इंडिया जेंडर गैप रिव्यू 2009 के विशेष संस्करण में ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स द्वारा कवर किए गए 134 देशों में से भारत 114 वें स्थान पर है, भले ही उसने स्वास्थ्य लिंग अंतर का 93%, शिक्षा खाई का 84%, आर्थिक का 41% बंद कर दिया है भागीदारी अंतर और राजनीतिक सशक्तिकरण लिंग अंतर का 27% है। भारत में, स्थानीय स्तर पर महिलाओं को शक्ति देने से सार्वजनिक वस्तुओं, जैसे पानी और स्वच्छता के प्रावधान में वृद्धि हुई, जो महिलाओं के लिए अधिक मायने रखती थी। कोई भी राष्ट्र, समाज या समुदाय अपने सिर को ऊँचा नहीं रख सकता है और यदि यह समुदाय के आधे हिस्से के खिलाफ भेदभाव की प्रथा का समर्थन करता है, तो यह सभ्य दुनिया का हिस्सा होने का दावा नहीं कर सकता है। समाज में लड़कों के लिए निरंतर प्राथमिकता, बालिकाओं के लिए उदासीनता जारी है ।

सरकारी प्रयास

हमारी नीति प्रतिक्रिया में 24 जनवरी को राष्ट्रीय बालिका दिवस (2009 में घोषित) को चिह्नित करना, छिटपुट रूप से प्रमुख चौराहों पर होर्डिंग लगाना शामिल है। हमें 'बालिका से प्यार करना', 'बेटी बचाओ', 'लड़कियों को मारना बंद करो', और केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर लड़कियों के जन्म को प्रोत्साहित करने के लिए गैर-सशर्त सशर्त नकद हस्तांतरण योजनाओं की एक श्रृंखला दी गई है। यूएनएफपीए द्वारा संचालित 15 सशर्त नकद हस्तांतरण योजनाओं (धन लक्ष्मी, लाडली, बेटी है अनमोल, कन्यादान) की 2010 डेस्क की समीक्षा से पता चलता है। उनमें से अधिकांश ने परिपक्वता पर अपेक्षाकृत कम मात्रा का वादा किया था, जटिल परिस्थितियां थीं (टीकाकरण, स्कूल नामांकन, संस्थागत प्रसव, नसबंदी), 18 वर्ष की आयु में नकद राशि दी (दहेज के लिए), और गरीब या बीपीएल परिवारों के उद्देश्य से थी। छोटी रकम के बदले में हर कल्पनीय तरह के Behavior वांछित 'व्यवहार (टीकाकरण, शिक्षित, नसबंदी) के लिए आपत्तिजनक प्रयास के अलावा काफी बड़ी समस्या यह है कि इन योजनाओं को गरीब परिवारों में बड़े पैमाने पर लक्षित नहीं किया गया है।

चीन और भारत में लड़कियों की तुलना में अधिक लड़के हैं:-

बेटों के लिए वरीयता चीन और भारत के लिए मुसीबत बन सकती है, गर्भवती होने पर लड़के या लड़की की इच्छा करना एक बात है, लेकिन यह पूरी तरह से आपकी इच्छा की गारंटी के लिए कदम उठाने के लिए कुछ और है। चीन और भारत में जहां लड़कियों के लिए लड़कों का

Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-4044

अनुपात इतना है कि अर्थशास्त्री परियोजना में 2020 तक दोनों देशों में विवाह योग्य उम्र की महिलाओं की तुलना में 30 से 40 मिलियन अधिक पुरुष हो सकते हैं।

सवाल यह है- क्यों ? यह हर 100 लड़कियों के लिए 105 लड़कों के ऐतिहासिक जन्म अनुपात से अधिक है। गर्भपात और शिशु हत्या, दोनों बड़े पैमाने पर चीन में प्रति परिवार एक बच्चे की लंबे समय तक सीमा से प्रेरित हैं, प्रत्येक ने एक भूमिका निभाई। चीनी पुरुषों को घर पर संभावित दुल्हनों के सीमित पूल के साथ छोड़ दिया है, ताकि वे अपने स्वयं के देशों के साथ-साथ विदेशों में भी पत्नियों की तलाश कर सकें। लेकिन चीन और भारत के दिग्गजों के लिए साथियों की एक कमी एकमात्र चिंता नहीं है, जो पृथ्वी पर 6.7 बिलियन लोगों के 2.4 बिलियन के लिए जिम्मेदार है। जनसंख्या आकार में लिंग अंतर को वर्षों से जनसंख्या के पूर्ण आकार के पुरुष-महिला अनुपात की जांच के साथ-साथ वर्षों में जनसंख्या की वार्षिक विकृति विकास दर के पुरुष-महिला अनुपात से मापा जाता है। इनके अलावा, वर्षों से जनसंख्या की आयु-संरचना के लिंग अंतर का निरीक्षण करने के लिए पुरुष-महिला अनुपात के माध्यम से एक परीक्षा की जाती है। अंत में, पुरुष-महिला अनुपात के माध्यम से जन्म की संख्या के संबंध में लिंग अंतर वर्षों में आयोजित किया जाता है। तालिका 1 समय के साथ आबादी और विकास दर के लिंग अंतर को दर्शाती है।

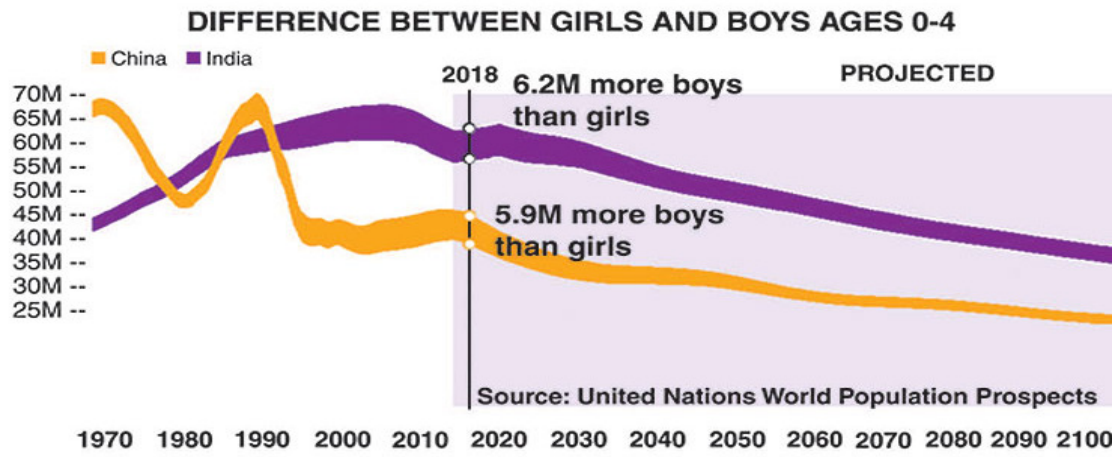

चीन और भारत की जनसंख्या में आयु-संरचना के लिंगानुपात की तुलना

व्यापक नीति सुधारों की आवश्यकता

तो हम क्या गलत कर रहे हैं? - हमारे द्वारा बनाए गए नीति मार्ग में हमने चलने के लिए चुना है, इसके साथ शुरू करने के लिए, हमने एक गहन प्रतिरोधक बीमारी (पुत्र की प्राथमिकता और भारत में महिलाओं की निम्न स्थिति) के लिए एक व्यापक राष्ट्रीय नीति

प्रतिक्रिया को विकसित करने के बजाय, एक लक्षण (सेक्स चयन का अभ्यास) को लक्षित करने के लिए चुना है। राज्य की नीति में, मुख्य रूप से, प्रौद्योगिकी की आपूर्ति को रोकने की मांग करना शामिल है जो कानून के आवेदन के माध्यम से यौन चयन को सक्षम बनाता है-पीसीपीएनडीटी अधिनियम एक भ्रूण के लिंग का निर्धारण करने के लिए नैदानिक तकनीकों के उपयोग पर प्रतिबंध लगाता है।

बच्चों को नैतिकता को बनाए रखने और दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या और लिंग पूर्वाग्रह से बचना सिखाया जाना चाहिए। बच्चों के संवेदनशील दिमाग इतने प्रभावित होने चाहिए कि वे वयस्क हो जाएं जो दहेज और कन्या भ्रूण हत्या को अनैतिक मानते हैं। महिलाओं को भी बचपन से ही सामाजिक होना चाहिए ताकि वे खुद को पुरुषों के बराबर समझ सकें। यह आने वाली पीढ़ियों पर एक सकारात्मक प्रभाव होगा क्योंकि आज की बालिका कल की माँ के साथ-साथ सास भी होगी ,संतुलित लिंग संरचना की दिशा में प्रमुख अवरोध सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दों के आधार पर लैंगिक असमानता है। नारियों के व्यवस्थित भेदभाव को हमारे समाज से निपटने की जरूरत है।

माइंडसेट बदलने की आवश्यकता

सत्य मेव जयते हमारे देश का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य है। कन्या भ्रूण हत्या की व्यापक रूप से बढ़ती प्रथा को देश के अधिकांश हिस्सों में घटते पुरुष: महिला अनुपात द्वारा स्पष्ट किया जाता है। लेकिन यह हमारे देश के लिए पर्याप्त नहीं है। क्या हम वास्तव में यह महसूस करने में असफल हैं कि यह अमानवीय प्रथा अनैतिक, अनैतिक और गैरकानूनी है, इसके गंभीर नतीजे हैं? क्या हम अपने अव्यवस्था की तुलना में कुछ अव्यक्त लेकिन अधिक शक्तिशाली ताकतों के प्रभाव में सच्चाई की अनदेखी करते हैं। जहां तक लोगों की मानसिकता में बदलाव लाने की बात है तो नारी सशक्तिकरण और बेटियों को गरिमामयी जीवन देने के लिए सरकार द्वारा कई बेहतरीन योजनाएं तो चलाई जा रही हैं लेकिन यहां यह ध्यान रखना होगा कि कहीं ऐसा न हो कि विभिन्न सरकारी योजनाएं सरकारी फाइलों या विभिन्न मंचों पर सरकारी प्रतिनिधियों द्वारा फोटो खिंचवाने की प्रथा तक ही सीमित होकर रह जाएं। इसके लिए युद्धस्तर पर जनजागरण अभियान की भी महत्ती आवश्यकता है।

संदर्भ सामग्री

1. Jeremy Hsu on August 4, 2008 There Are More Boys Than Girls in China and India, Preference for sons could spell trouble for China and India.

2. योगेश कुमार गोयल-लिंगानुपात में असंतुलन की गंभीर समस्या -By SK India- February 28, 2018 00:07:32.
3. भारत में घटता लिंगानुपात: कारण, लिंग अंतर और नीतिगत सुधार की आवश्यकता इसके द्वारा साझा किया गया लेख।
4. SK India, लिंगानुपात में असंतुलन की गंभीर समस्या, Posted on February 28, 2018 00:07:32.
5. Poonam Muttreja, AUG 25 2019, Population explosion or declining fertility in India?
6. बरुण कुमार मुखोपाध्याय और प्रसांत कुमार मजूमदार-भारत की जनसंख्या, स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार में लिंग-अंतर और रुझान की स्थिति।
7. Puja Mondal, Article shared -Population: Notes on Population Growth Rate and How to Control it.
8. HEMANT SINGH, OCT 13, 2016 17:29 IST Census 2011: Literacy Rate and Sex Ratio in India Since 1901 to 2011.
9. डॉ. भोपालसिंह (1999) "जनसंख्या शिक्षा परिचय" आर्य डिपो, मेरठ। पृष्ठ संख्या 18, 169.
10. डॉ. आर0 ए0 शर्मा (1996) शिक्षा तकनीकी इन्टरनेशनल पब्लिशिग हाऊस PP 104-106.
11. डॉ. वी0 एल0. जरारे-(1994) शोध प्रणाली Research Methology ए0बी0डी0 पब्लिषर्स, ईमली फाटक जयपुर। pp 226, 219.
12. डॉ. आर0 ए0 शर्मा (2005) मापन मूल्यांकन एवं सांख्यिकी-लायल बुक डिपो मेरठ-346.
13. डॉ. हेतसिंह बघेला (1998) जनसंख्या शिक्षा शिक्षक माया प्रकाशन मंदिर, त्रिपोलिया बाजार जयपुर-2. pp-72, 79, 154.
14. डॉ. के0 सी0 मलैया/ डॉ. रमा शर्मा (2000) जनसंख्या शिक्षा विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2. PP 72, 87, 99, 154.
15. डॉ. एच0 के0 कपिल (2002) सांख्यिकी के मूल तत्व विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2. pp 506, 703.
16. डॉ. हेतसिंह बघेला (1998) "जनसंख्या शिक्षा" माया प्रकाशन मंदिर, जयपुर.
17. स्वाति गुप्ता द्वारा, सी.एन.एन. 22 जनवरी, 2019 अपडेटेड 0020 GMT (0820 HKT).